गवाहियाँ

सितशोकुफि सिबान्डा: एक अग्रगामी कलीसिया स्थापक

रिनेवल 2027 गवाही: ऐतिहासिक रूपरेखा

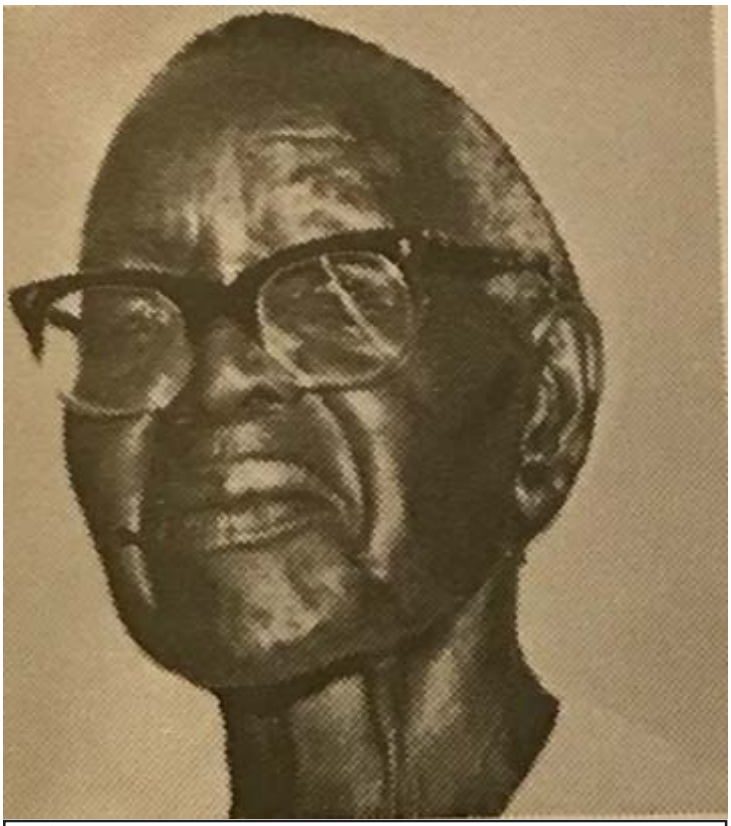

साइलेंट लेबरर्स, डोरिस ड्यूब, माटोपो बुक सेन्टर: बुलावायो, जिम्बाब्वे, 1992।

बीआईसीसी जिम्बाब्वे कॉंफ्रेंस की आधे से अधिक ग्रामीण कलीसियाओं की अगुवाई महिला पासबानों के द्वारा की जा रही है। अनेक स्त्रियाँ जिन्होंने बीआईसी कलीसियाओं की स्थापना की है, उनके ऐसा करने का कारण यह है कि वे एक ऐसे स्थान में निवास कर रहीं हैं जहाँ कोई मण्डली नहीं थी और वे अन्य विश्वासियों के साथ संगति के लिए तरसती थीं। उन्होंने घर में सहभागिता करना आरम्भ किया। कुछ अवसर पर महिलाओं को इसलिए अगुवाई का अवसर दिया गया क्योंकि वे आत्मिक रूप से परिपक्व थीं और उन्हें परमेश्वर के वचन का ज्ञान है। बीआईसीसी महिलाओं में से अनेक प्रचारिकाएं ऐसी महिलाएं हैं जिन्हें अपने क्षेत्र में काफी आदर दिया जाता है।

आरम्भ में कलीसिया स्थापना की सेवकाई करने वाली और सुसमाचार का प्रचार करने वाली ब्रदरन इन ख्राइस्ट (बीआईसी) जिम्बाब्वे की प्रथम महिलाओं में से एक सितशोकुफि सिबांडा है।

जब प्रथम मिश्नरी जिम्बाब्वे में 1898 में आ कर बसे उस समय यह बहन अपनी किशोरावस्था में पहुँच चुकी थी।

वह मन फिराने वाले प्रथम लोगों में शामिल थी जिन्होंने मिशन से पुस्तकों द्वारा कुछ शिक्षाएं प्राप्त की थीं। सितशोकुफि ने इसी दौरान अपना जीवन परमेश्वर को दिया और उसके बाद उन्होंने कभी मुड़ कर नहीं देखा।

सितशोकुफि को गाँववालों की ओर से भारी चुनौतियों का सामना करना पड़ा जो पारम्परिक धारणाओं पर बहुत आस्था रखते थे और अपने पूर्वजों के समय से चली आ रही पूजा उपासना में पूरी तरह से फँसे हुए थे। उन्हें अपने परिवार, अपने पड़ोसियों, और मित्रों की ओर से भी विरोध और उपहास का सामना करना पड़ा। खेतों में सहायता करने वाले हाथों का पीछे खींच कर वह क्या समझती है कि वह कर रही है।

एक बार सब लोग उन पर बुरी तरह से भड़क उठे जब वर्षा के लिए की जा रही एक पूजा के दौरान वह कुछ मिशनरियों के साथ उस पूजा स्थल पर पहुँच गई। यह एक जोखिमभरा कदम था क्योंकि किसी को भी उस पवित्र माने जाने वाले स्थल पर जाने को अनुमति नहीं थी। और जब उसके बाद अनेक वर्षों तक वर्षा नहीं हुई, तो दोष उसी पर मढ़ दिया गया। परन्तु यह उसे सुसमाचार प्रचार करने से नहीं रोक सका।

अपने जीवन के बाद के दिनों में, वे लम्बे समय तक म्तशबेजी अस्पताल में रहीं।

उनकी वृद्धावस्था और यात्रा कर पाने में उसकी असमर्थता भी उसके बुलाहट से उसे न रोक सकी। अस्पताल ही उसके लिए सेवा एक नया क्षेत्र बन गया।

4 नवम्बर 1971 को, सितशोकुफि प्रभु में सो गई। उन्होंने अपनी दौड़ अच्छी तरह से पूरी की, और परमेश्वर पर विश्वास का एक अद्भुत विरासत पीछे छोड़ गई।

सितशोकुफि के कार्यो पर एक मर्मस्पर्शी कथन जो उनके स्वयं का कथन है, ''प्रभु के लिए पूरा समय दे कर कार्य करना अच्छी बात है, परन्तु पूरा समय कलीसिया को देना अच्छी बात नहीं है।''

सितशोकुफि को मातोपो मिशन में मिट्टी दी गई जो एक ऐसा स्थान है जिसे परमेश्वर के कुछ सबसे सम्मानीय सेवकों को मिट्टी देने के लिए सुरक्षित रखा गया है।

– बाबर्रा न्काला द्वारा जारी मेनोनाइट वर्ल्ड कॉंफ्रेंस की एक विज्ञप्ति, डोरिस ड्यूब के *साइलेंट लेबरर्स* से।